International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

बिहार के स्वाधीनता संघर्ष में समाजवादी संगठनों की भूमिका

डॉ० मनोज कुमार गुप्त
एम.ए., पीएच.डी.
इतिहास, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर।

बिहार में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और कांग्रेस समाजवादी पार्टी वामपंथ के विकास की दिशा में दो शक्तिशाली संगठनों ने अभूतपूर्व भूमिका का निर्वहन किया। इसके पीछे 7 नवम्बर, 1917 की रूसी क्रांति की परिणति ही मुख्य प्रेरक शक्ति थी। असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले बहुत नौजवान इसके परिणामों से नाखुश थे। गाँधीवादी नीतियों और उससे उत्पन्न वैकल्पिक स्वराजी या स्वराजवादी कार्यक्रमों में इस नवोदित युवा वर्ग ने अनेक अवगुणों को उछालना शुरू किया। इसके लिए उन लोगों ने समाजवादी विचारों को सीधे जमीन पर उतारने की कोशिश की। इस समय तक भारत के विभिन्न भागों में समाजवादियों और कम्युनिस्टों के संगठन बन चुके थे। बंबई में अमृत श्रीपाद डांगे ने ''गाँधी और लेनिन'' नामक एक पर्चा छपवाकर बाँटा। उन्होंने ''दि सोसलिस्ट नामक साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशित की। कलकत्ता में मुजफ्फर अहमद ने ''नवयुग'' पत्रिका प्रकाशित की। कवि काजी नजरूल इस्लाम ने ''बंगाल'' पत्रिका प्रकाशित की।

पंजाब में गुलाम हुसेन ने अपनी वामपंथी साथियों के सहयोग से ''इन्कलाब'' पत्रिका का प्रकाशन किया। मद्रास में एम. सिंगारवेल ने ''लेबर किसान गजट'' का प्रकाशन किया। इस तरह समग्र भारत में 1927 के बाद युवकों ने वामपंथी संगठनों की विभिन्न नामों से स्थापना की।[1] इसी सिलसिले में जवाहर लाल नेहरू तथा सुभाषचन्द्र बोस ने पूरे देश का दौरा किया। उनके भाषणों में साम्राज्यवाद, पूंजीवाद तथा जमींदारी प्रथा के अलावे देशी राजाओं की मनमानी के खिलाफ शंखनाद था।

भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में उग्रवादी आंदोलन और संगठनों का सिलसिला जारी था। पूरे देश में किसान आंदोलन और कल–कारखानों के मजदूर आंदोलन और

ट्रेड युनियन का भी तांता लगा। सर्वोपरि 1929 में लाहौर कांग्रेस के अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू बने और मंच से उन्होंने आह्वान किया कि आजादी की परिभाषा केवल राजनीतिक शब्दावली में नहीं प्रस्तुत की जा सकती, बल्कि सामाजिक आर्थिक रूझानों का भी उसमें होना जरूरी है। उन्हें फिर 1936 तथा 1937 में कांग्रेस का अघ्यक्ष चुना गया। उन्होंने भारत का सघन दौरा किया, हजारो मील यात्राएँ की और किसान मजदूर सभाओं का उन्होंने सम्बोधित किया।

जवाहर लाल नेहरू पूर्वी उत्तर प्रदेश के किसान आंदोलनों के सम्पर्क में आए। यह 1920–21 का जमाना था। 1927, में उन्होंने ब्रसेल्स में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लिया और ''उपनिवेशवादी दमन एवं साम्राज्यवाद'' के विरोध में चिंतकों और सक्रिय नेताओं से भेंट की। इसी सिलसिले में उन्होंने रूस का भ्रमण किया और वापस होकर उन्होंने सोवियत संघ पर एक पुस्तक प्रकाशित की जिसके मुख पृष्ठ पर अंग्रेज क्रांतिकारी कवि विलियम वर्डसवर्थ की ये पंक्तियाँ भी लिखी– ''उस सुबह वेला में जिन्दा रहना वरदान था, लेकिन युवा होना तो स्वर्ग सुख के समान था।'' 1929 के लाहौर कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा कि ''मैं समाजवादी और लोकतंत्रवादी हूँ और राजाओं और राजकुमारों में मेरा विश्वास नहीं। मेरा उस व्यवस्था में विश्वास नहीं जो उद्योगों में आधुनिक राजाओं को जन्म देती है, जिनकी शक्ति और आम आदमी पर जिनका नियंत्रण राजा महाराजाओं से भी अधिक है और जिनके तौर–तरीके उसी प्रकार लुटेरों जैसे हैं, जैसे पुराने निरंकुश सामंतों में हुआ करते थे।''[2]

1933–1936 में ''भारत किधर'' का जवाब देते हुए जवाहरलाल नेहरू ने लिखा था ''निश्चित रूप से भारत सामाजिक और आर्थिक समानता के महान मानवीय लक्ष्य की ओर जा रहा है। वह एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र का तथा एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्गों तक सभी तरह के शोषण की समाप्ति तक के लिए जा रहा है।

बिहार में स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान समाजवादी संगठनों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना के द्वारा हुई थी। यह बिहार की धरती पर ही साकार हुआ संगठन था। इस संगठन की वास्तविक आधारशिला थी ''अनुशीलन'' जैसी क्रांतिकारी पार्टी की गतिविधि। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने मार्क्सवादी चिंतकों के समान बिहार में सामाजिक बदलाव के बिन्दु पर खुलेआम एक राष्ट्रीय क्रांति का नारा बुलन्द किया।

यह चेतना ठीक उसी लाइन पर जाग्रत हुई जैसा कि 1930 के प्रारंभिक समय में ऑफिसियल कम्युनिस्ट पार्टी की नीति के खिलाफ एम. एन. राय तथा उनके सहयोगियों ने

आवाज उठाई थी। बिहार में समाजवादी चिंतन के आयाम अजीबो–गरीब थे। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के अधिकांश लोग मूलतया कांग्रेसी थे और उन्हें गाँधी जी के साथ रहकर उनके शिष्य के रूप में काम करने का अनुभव था। गाँधी जी के अहिंसा, सत्याग्रह के आलोक में, रचनात्मक कार्यक्रम का संस्कार बरकरार था, लेकिन चम्पारण सत्याग्रह के बाद नक्शा बदला–बदला सा नजर आया।[3] निलहें जमींदारों के निष्कासन के बाद बिहार के बड़े–बड़े लोग, प्रभावशाली नेतागण ने, उसकी जगह ले ली, और राष्ट्रवादी, जमींदारों की जमात प्रकाश में आई। कांग्रेस संगठन के इस निहित स्वार्थ का भ्रष्टाचार का खुलासा हुआ। इस विकृति का अनेक रूप भारत के अन्य प्रांतों में भी उभर कर सामने आये। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की यह विद्रोही त्योरी थी और इस प्रकार की विकृतियों को ध्यान में रखते हुए इसने अन्तर्विरोध पैदा किया।

बेतिया के फनीन्द्र नाथ घोष ने उत्तर प्रदेश, पंजाब तथा बंगाल एवं असम के समाजवादियों से सम्पर्क किया। बेतिया में उन्होंने ''हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन'' का गठन किया और 1925 में राजनीतिक सक्रियता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ''हिन्दुस्तान सेवा दल'' के नाम से बड़ी संख्या में स्वयं सेवकों की क्रांतिकारी जमात खड़ी की। इस संगठन में सारण जिला के मलकाचक गाँव के राम गोविन्द सिंह का नाम मशहूर था। भारत सुरक्षा अधिनियम के तहत वह जेल चले गए थे। लेकिन जेल से बाहर आने पर राम विनोद सिंह ने अपने ही गाँव में 1921 में ''गाँधी कुटीर'' के नाम से एक आश्रम स्थापित किया था।[4] लेकिन 1929 तक यह आश्रम भी बर्बाद हो गया, इसके संस्थापक पर ही लगभग एक लाख रूपये गबन का आरोन लगा था और खद्दर उत्पादन के नाम पर जो यह रकम आवंटित हुई थी उसकी जाँच के लिए कांग्रेस बोर्ड को नियुक्त किया गया था।

इन विकृतियों के बावजूद कुछ सच्चे लड़ाकू भी समाजावादी संगठन के आधार स्तंभ के रूप में प्रकाश में आए। उनमें मुजफ्फरपुर जिला के जलालपुर गाँव के योगेन्द्र शुक्ल थे। उनके जीवन का बहुमूल्य समय पंजाब और उत्तर प्रदेश की धरती पर गुजर चुका था। बिहार के समाजवादी क्रांतिकारियों में उनका नाम अग्रणी था। उन्होंने 1929–30 के दौरान हाजीपरु में ''गाँधी आश्रम'' की स्थापना की थी। इस दौरान उनका नाम ''तिरहुल षड्यंत्र मामला'' में घोर क्रांतिकारी के रूप में प्रकाश में आया था। अन्य सात अधिकारियों के साथ उन्हें दस साल का कारावास हो गया था। इन तमाम समाजवादी क्रांतिकारी क्रियाकलापों के बावजूद इन संगठनों का ध्यान तोड़–फोड़, हत्या, हिंसक गतिविधियों या उग्रवादी गतिविधियों से थोड़ा अलग था।

समय–समय पर बंगाल के उग्रपंथी, क्रांतिकारी, बिहार के क्रांतिकारी संगठन को प्रभावित करते थे, इससे इंकार नहीं किया जा सकता।[5] चूँकि बिहार की धरती पर अतिवादी उग्रपंथी दल का जन्म नहीं हुआ, यहाँ उनका कार्य या प्रभाव कम था और अंग्रेजों को पुलिस प्रशासन एवं दमनकारी यंत्रों से इनका दमन आसानी से कर दिया जाता था। लेकिन 1933 में मेरठ षड्यंत्र केस से मुक्त हुए क्रांतिकारियों का प्रभाव बिहार में अवश्य पड़ा। इसी सिलसिले में क्रांतिकारी दर्शन और दार्शनिक तथा चिंतन और चिंतक के सच–झूठ का रहस्योद्घाटन भी हुआ। बेतिया का फणीन्द्र नाथ घोष का क्रांतिकारी स्वरूप किस प्रकार एक छलावा साबित हुआ, यह भी एक रहस्य है।[6] वह गद्दार साबित हुआ और अंग्रेजों की दलाली में उसी के बयान से भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी हो गई।

बिहार के स्वाधीनता संघर्ष में समाजवादी और साम्यवादी संगठनों का एक दिलचस्प भाग यहाँ के क्रांतिकारियों की जीवनियों से भी उजागर होता है। इन क्रांतिकारियों में समाजवाद के स्वरूप का भिन्न–भिन्न अर्थ विश्लेषण होते थे। खासकर कांग्रेस सोशलिस्ट का समाजवाद वेदान्त, बोल्शेविज्म का परिपाक था जिसमें धर्म और अर्थशास्त्र के सिद्धांतों के विलक्षण समागम था। इस अजीबोगरीब समाजवाद के प्रणेता सम्पूर्णानन्द और आचार्य नरेन्द्र देव थे जिसके मार्क्सवाद के ऊपर कॉमिन्टन का कोई बंधन आवश्यक नहीं था। इस समाजवाद के क्रांतिकारी हाव–भाव के बढ़ते कमद के लिए गाँधीवादी विरोध के अलावे भी राष्ट्रवाद से दूरी नहीं थी।[7]

इसके विपरीत क्रांति से प्रतिबद्ध एवं सक्रिय नौजवान कांग्रेस सोशलिस्ट संगठन में मार्क्सवाद और साम्यवाद के साथ एक चरण में गाँधीवादी की चाशनी चढ़ाना चाहते थे ताकि आम आंदोलन के लिए 1930–31 के जमाने में सविनय अवज्ञा का अलख जगाया जा सके।[8] मार्क्सवाद और गाँधीवाद का यह अनुपम और अद्भुत मिश्रण कांग्रेस सोशलिस्ट सिद्धांत का विलक्षण शंखनाद था। आत्म–बलिदान की सारहीनता भी इसका एक खास लक्षण थी जो गाँधीवाद से मेल नहीं खाती थी। इस तरह के सैद्धांतिक उहापोह के पीछे 1931–32 के जमाने में अंग्रेजों के निमर्म दमनकारी क्रियाकलापों का अधिक हाथ था जिनसे आक्रांत होकर कांग्रेस सोशलिस्ट के लोग क्रांतिकारी हिंसा के प्रति रहस्यवादी दर्शनशास्त्र पर रातों दिन सोचने–समझने में रूचि लेते रहते थे।[9]

साम्राज्यवाद विरोधी त्योरी के लिए कांग्रेस सोशलिस्ट सदस्यों को मार्क्सवाद और साम्यवाद के क्रांतिकारी मूल्य को समझने की जरूरत नहीं थी। यों भी, उग्रपंथ के संगठनों में भी

मुण्डे–मुण्डे मर्तिभिन्ना बहुत थे। कुछ एम. एन. राय के दीवाने थे, कुछ साम्प्रदायवादी और भारत माता के शास्त्रीय भक्त भी थे और कुछ सविनय अवज्ञाकारी भी थे। कुछ कम्युनिस्ट लोग बंगाल में जमें रहने के कारण और खाते–पीते अच्छे घराने से आते थे और बिहार की घटनाओं से अपने को जोड़ते थे, लेकिन अपने मूल भद्रलोकीय संस्कार पर गौरव भी करते थे। इन तमाम सोच–समझ के बावजूद यह विचार भी कम बलवान नहीं था कि मजदूर–किसान के सशस्त्र विद्रोह के बिना आजादी की जंग नहीं जीती जा सकती।[10]

1931–34 के जमाने में क्रांतिकारियों में ये विचार खुलकर आने लगे कि कांग्रेसी क्रांतिकारी सिद्धांत और पार्टी द्वारा परिभाषित साम्यवाद का सिद्धांत दोनों साथ–साथ चलेंगे। आजादी और सामाजिक बदलाव के लिए मार्क्सवाद के प्रति आस्था और आम आंदोलन तथा सक्रियता दोनों जरूरी माने जाने लगे। अंग्रेजी राज का विनाश जरूरी काम था। इसीलिए इस तरह के सैद्धांतिक मिश्रण, बहस, सोच–विचार से परहेज नहीं था। कांग्रेस दक्षिणपंथी भी समाजवाद की बात करते थे और आम आंदोलन का शंखनाद करते थे, क्योंकि शत्रु दोनों का एक ही था–साम्राज्यवादी उपनिवेशवाद।

इन चिकनी–चुपड़ी सैद्धांतिक बहस और तथाकथित सभ्यता शिष्टाचार से ओत प्रोत चिंतन प्रणाली का सिलसिला ज्यादे दिन तक नहीं चल सका और जब सरकारी दमन तथा चुनावों के द्वारा प्रतिनिधित्व के मीठे रस का दौर चला तब आदर्श के सभी खंभे हिल गए, क्रांति और शांति का समन्वय विचारों का दलदल साबित हो गया। गाँधी जी ने 1933 में जब सविनय अवज्ञा को स्थगित कर दिया तो सब के सब हतप्रभ हो गए। बिहार के समाजावादी संगठन के लोग विचारों के भँवर में पड़ गए। इस चुनावी तालमेल का सिलसिला 1934 में जब शुरू हुआ तब तमाम क्रांतिकारी नौजवानों का भ्रम टूट गया। वे कांग्रेस से अलग–थलग हो गए। पटना में 1934 के जून में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की बैठक में सविनय अवज्ञा के स्थगन की घोषणा हुई– नया तमाशा सामाजावादी चिंतन के नाम पर शुरू हुआ। संवैधानिक रास्ता, सरकारी परामर्श और क्रांतिकारी सक्रियता के उहापोह में कुहासा छा गया।[11]

1934 के अक्टूबर महीना में अखिल भारतीय कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन हुआ। व्यक्तिगत सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा के स्थगन से इसकी उत्पत्ति हुई। कांग्रेस के वामपंथ और उससे जुड़े क्रांतिकारी लोग आपस में खूब झगड़ गए, बहसों का तांता लग गया। कुछ का मानना था कि बिना आम जनक्रांति के सम्पूर्ण आजादी संभव नहीं और कुछ का मानना

था कि बिना साम्यवाद के यह आजादी संभव नहीं। जवाहरलाल नेहरू ने अपनी बौद्धिक गरिमा से ओतप्रोत अनेक लेख प्रकाशित किए जिन पर एम. एन. राय की स्पष्ट छाप थी। उन्होंने अपने को कम्युनिस्ट तक घोषित कर दिया, वह दो साल के लिए जेल चले गए। बिहार के समाजवादी चिंतकों में कुहराम मच गया। कांग्रेस सोशलिस्ट संगठन के लोग समझने लगे कि अब युगांत्कारी कुछ होने वाला था।

कांग्रेस का दक्षिणपंथी हिस्सा संविधानवादी सुधारों के प्रति मुग्ध हुआ, सत्ता का आनंद लेने में लीन हो गया। इस हालात में एक स्वतंत्र वामपंथी संगठन की ओर कुछ कांग्रेसी झुके, लेकिन वह संगठन अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद के बिना प्रभावित हुए एक आदर्श के साथ था। इनका समाजवाद वर्गीय समझौता का पक्षधर था, वर्गयुद्ध का विरोधी था। बिहार में कांग्रेस सोशलिस्ट के चिंतक दार्शनिक क्रांतिकारी थें इनकी जीवनी, इनकी गतिविधि, इनकी जमात दिलचस्प थी और बिहार के स्वाधीनता संघर्ष की एक दिशा प्रकाशित करती है। शायद बिहार का वर्तमान इसी उहापोह का नतीजा है।

ऐसा माना जाता है कि 1934 में अलग समाजवादी गुट का निर्माण एक ऐतिहासिक आवश्यकता थी। इसने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की लम्बी प्रक्रिया की चर्चा की। सम्पूर्णानन्द ने 1934 के 3 अप्रैल के दिन ''अखिल भारतीय समाजवादी दल'' की स्थापना का प्रस्ताव किया। इस सिलसिले में उन्होंने लेनिनवादी समाजवाद से हटकर भारत की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के आलोक में इसकी स्थापना का प्रस्ताव दिया जो धर्म निरपेक्षता से भी एक दूरी बनाये रखेगा। इस समाजवाद को सर्वहारा से अधिनायकत्व, वर्ग युद्ध और वर्ग विहीन समाज से कुछ लेना देना नहीं था। इसके घोषणा पत्र मे जमींदारों को वाजिब मुआवजा देते हुए जमींदारी उन्मूलन का प्रोग्राम था, ग्रामीण कर्ज को सही दिशा देना, खेती–बारी में सुधार, मुख्य उद्योगों का राष्ट्रीकरण, बौद्धिक और आम मेहनतकश का बीमाकरण, वेतन का निर्धारण, मेहनतकशों का स्वास्थ्य सुरक्षा आयकर, विधानसभा का परोक्ष चुनाव जैसे कार्यक्रम थे। कालांतर में पटना में जब 18–19 मई 1934 को बैठक हुई तो ऑल इंडिया कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई, अंजुमन इस्लामिया हॉल में आचार्य नरेन्द्र देव (सभापति), जय प्रकाश नारायण (मंत्री) एवं प्रोफेसर अब्दुल बारी, पुरूषोत्तम दास, त्रिकरम दास, एम. आर. मसानी, सम्पूर्णानन्द, सी. सी. बनर्जी और फरिदुल हक सदस्य शामिल थे।

संदर्भ सूची :–

1. सत्यव्रत राय चौधरी, लेफ्टीस्ट मूवमेंट्स इन इंडियाः 1917–1947, पृ. 26।
2. एच. विलियम्सन (सं.) ''इंडिया इन कम्यूनिज्म, पृ. 218–22।
3. वही, पृ. 223।
4. एम. एन. राय, सदाकत आश्रम, इंडियन नेशन, 27 जुलाई 1964।
5. वही।
6. शंकर घोष, लीडर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया, र्नठ दिल्ली, 1980, पृ. 376।
7. वही।
8. राजेन्द्र प्रसाद, आत्मकथा, पृ. 258–59।
9. वही।
10. विपिन चन्द्र, द इंडियन लेफ्ट, पृ. 312।
11. एच. विलियम्सन (सं.) ''इंडिया इन कम्यूनिज्म, पृ. 264।

♦♦♦♦♦